Need to form a clear policy on scientific research pertaining to animal and human clones and artificial insemination

श्री राम नारायण साहू (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान मानव अनुवांशिकी एवं प्रजनन पर चल रहे आधुनिक अनुसंधान की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। मैं विज्ञान और विकास का पूर्णरूप से पक्षधर हूं। मैं आश्वस्त हूं कि वर्तमान समाज विकास के जिस सोपान पर खड़ा है, वह विज्ञान की देन है। इसके लिए मानव जाति विज्ञान की ऋणी रहेगी, परन्तु कुछ खोजों के दुष्परिणाम मानव जाति को सदियों तक भोगने पड़ सकते हैं। जब अल्ट्रासाउंड मशीन का प्रयोग शुरु हुआ, तो आशा बंधी की गर्भस्थ शिशु को रोगों से बचाने के लिए यह वरदान सिद्ध होगी। तब मुझे भी बहुत प्रसन्नता हुई थी। इससे गर्भ में पल रहे शिशुओं को लाभ पहुंचा होगा, मैं नहीं मानता, परन्तु अकेले भारत में नन्हीं बालिकाओं की जन्म से पहले ही हत्या, इसी मशीन की कृपा से हो चुकी है। यहां तक कि देश में महिला-पुरुष के अनुपात का संतुलन बिगड़कर, खतरे के निशान को पार करने लगा है।

महोदय, आजकल विश्व में तथा भारत में पशुओं और मनुष्यों के क्लोन बनाने की विधि पर तेजी से कार्य हो रहा है। इनमें भैंस, भेड़ और चूहे आदि के क्लोन सफल रूप से बनाए गए हैं। दूसरी ओर कृत्रिम शुक्राणु बनाकर बिना नर के सहयोग से बच्चे को जन्म देने में चूहों पर सफलता प्राप्त की गई है तथा मनुष्यों पर प्रयोग जारी है। मुझे विज्ञान से शिकायत नहीं है, मगर मेरा मानना है कि यह एक गंभीर मुद्दा है और इस पर गहन चिंतन एवं चर्चा की आवश्यकता है। इसके परिणामों एवं दुष्परिणामों को पूरी तरह समझना आवश्यक है। प्रकृति का संचालन प्राकृतिक सिद्धांतों के आधार पर होता है। उसे परिवर्तित करने के लिए प्रजनन प्रक्रिया के साथ बुनियादी छेड़छाड़ करना किस हद तक तर्कसंगत होगा और इसके परिणाम कितने हितकारी होंगे, यह प्रश्न चिंतनीय है। यह प्रश्न मेरा या आपका नहीं है, बल्कि पूरी मानव जाति की सृष्टि का है, इसलिए इस पर कोई कदम बढ़ाने से पहले गहन चिंतन आवश्यक है। अतः सरकार को इस विषय पर अपनी नीति स्पष्ट करनी चाहिए। धन्यवाद।

Need to provide security forces with vehicles fitted with Anti-mine Technique

श्री श्रीगोपाल व्यास (छत्तीसगढ़) : दिनांक 20-7-09 को लिखित प्रश्न क्रं. 2744 के उत्तर में कहा है कि सुरंग निरोधी वाहन तो बनाए जाते हैं, पर वे उपकरण नहीं बनाए जाते, जो सुरंग निरोधी हैं। आयात की जानकारी भी वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। 10 राज्यों में ये वाहन काम आ रहे हैं। इनमें अधिकांश नक्सल प्रभावित हैं। ज्यादातर सुरक्षा व पुलिस बल सुरंगों द्वारा उड़ाए जा रहे वाहनों में मारे जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी का पूर्ण उपयोग कर इनको उचित उपकरणों से शीघ्रताशीघ्र शुरू कर लोगों की जान-माल की रक्षा की जाए, यह मेरा सरकार से आग्रह है।

Demand to open ESIC medical college in orissa

SHRI RAM CHANDRA KHUNTIA (Orissa) : Sir, the ESIC Board decided to start a medical college for better medical care and super speedy treatment of insured persons and have more doctors. Replying to my Starred Question, the hon. Minister has replied that the ESIC has the proposal for opening of 27 medical colleges in different States, but not in Orissa. Orissa is a backward State having less medical colleges. Even though the original ESIC Board proposal included Orissa State and the medical college place was selected to be at Bhubaneshwar, unfortunately, it is not included in the Ministry's reply. This has created frustration among all the ESIC beneficiaries and all Orissa people in general.

The ESIC and the Ministry say that Orissa Government is not giving 25 acres of land which is required for the medical college. Whether Orissa Government is really not giving the land or the ESIC is not interested in having a medical college in Orissa, we do not know. But, Orissa State, as a whole, is losing a medical college proposed by the ESIC.

I, therefore, urge upon the Labour Ministry to discuss with the Orissa Government to get the required land for medical college or the ESIC may also directly purchase 25 acres of land and start a medical college or else Orissa people and ESIC personnel may start agitation programme to press for their right for having a medical college and a dental college of ESIC in Bhubaneshwar, Orissa.

Demand for linguistic minority Status to Nepali speaking people in the country

श्री समन पाठक (पश्चिमी बंगाल) : महोदय, मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार का ध्यान नेपाली/गोरखी भाषा-भाषियों को भाषायी अल्पसंख्यक दर्जा दिए जाने की ओर आकृष्ट करना चाहूंगा।

महोदय, नेपाली भाषा देश के हर क्षेत्र में बोली जाती है। यह भाषा बोलने और समझने वालों की अनुमानित जनसंख्या एक करोड़ से ज्यादा है। नेपाली भाषा बोलने वाले विशेष रूप से दार्जिलिंग एवं पश्चिमी बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों से लगे सिक्किम, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, दिल्ली, मुम्बई, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड एवं दक्षिण भारत के कुछ हिस्से में निवास करते हैं।

महोदय, किसी भी जाति का चिह्न उनकी भाषा एवं भूमि से जुड़ा हुआ होता है। लेकिन हिन्दी भाषा और उर्दू भाषा भारत के हर क्षेत्र में बोली जाती है। उनको एक निश्चित प्रदेश की भाषा के रूप में नहीं जाना जाता है। वैसे ही नेपाली भाषा भी किसी एक प्रदेश की निश्चित भाषा नहीं है। वह देश के हर प्रांत में बोली जाती है। लेकिन हिन्दी एवं उर्दू की तरह नेपाली भाषा विकसित नहीं हो पाई है, क्योंकि हर राज्य/प्रदेश में यह भाषा क्षेत्रीय भाषा या अल्पसंख्यक भाषा के रूप में है। 1992 में नेपाली भाषा का आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त होने के बाद भी इसका आशानुरूप विकास नहीं हो रहा है।

महोदय, भारतवर्ष विभिन्न भाषा, साहित्य-संस्कृति एवं परम्परा मिश्रित देश है। यह विभिन्नता में एकता एवं अखंडता का बेमिसाल नमूना है। अगर नेपाली/गोरखी भाषा और भी सम्बद्ध एवं विकसित हुए, तो यह देश के मिश्रित भाषा, साहित्य-संस्कृति धरातल को और मजबूत करने में मददगार साबित होगा।

अत: मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार से अनुरोध करना चाहूंगा कि वह नेपाली भाषा-भाषियों को हर राज्य/प्रदेश में भाषायी अल्पसंख्यक का दर्जा प्रदान करने में मदद करे।

Need to protect the fossils and cave paintings from Mining Mafia and smugglers in Sonbhadra District, Uttar Pradesh

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में सलखन पार्क में 150 करोड़ वर्ष पुराने फासिल्स का रख-रखाव, संरक्षण करने में लापरवाही बरती जा रही है। इस स्थल की जानकारी वैज्ञानिक मैकलेनन ने 1831 में दुनिया को दी, लेकिन उसके 112 साल बाद 1993 में जे. वी. आर्डन ने सलखन आकर अध्ययन से यह साबित किया कि अमेरिका के यलो स्टोन नैशनल पार्क से भी फासिल्स का बेहतर उदाहरण यहां मौजूद है। जबकि सोनभद्र में ही एक और जटाशंकर फासिल्स पार्क के अस्तित्व ने पृथ्वी पर जीवन के प्रारंभ के प्रमाण उपलब्ध कराए।